<u>दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास</u>

मई – 2009

समय : 10.00 से 1.00 बजे तक

दिनांक : 21..05.2009

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

बी.ए. (तृतीय वर्ष) परीक्षा

विषय : हिंदी प्रश्न पत्र : 1 (वैकल्पिक)

शीर्षक : आधुनिक हिंदी गद्य

समय : 3 घंटे पूर्णांक : 75

I. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं *तीन* के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।
3x10=30

1. हिंदी निबन्ध साहित्य के उद्भव एवं विकास पर एक लेख लिखिए।
2. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का **'साहित्य की महत्ता'** निबंध के आधार पर समाज में साहित्य की महत्ता बताइए।
3. **आत्म निर्भरता** निबंध में आये हुये ऐतिहासिक प्रसंगों की चर्चा करते हुए समझाइए कि उनसे क्या प्रेरणा मिलती है?

4. **'पूस की रात'** कहानी में भारत के किसानों की दयनीय दशा का चित्रण मिलता है। चर्चा कीजिए।

5. हरिशंकर परसाई की **'भोलाराम का जीव'** कहानी की समीक्षा कीजिए।

II. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं *चार* के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए।

4x5=20

1. प्रताप नारायण मिश्र के दाँत निबंध के मूलभाव को स्पष्ट कीजिए।
2. निबंधकार 'आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का परिचय दीजिए।
3. **'गुंडा'** काशी के राज परिवार को कैसे बचाता है? कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
4. अज्ञेय के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।
5. **हल्कू** का चरित्र चित्रण कीजिए।
6. **आखिरी चट्टान** यात्रा –वृत्तांत का सारांश लिखिए।
7. रिपोर्ताज गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

III. निम्नलिखित पद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। **5x5=25**

1. आत्म संस्कार के लिए थोड़ी –बहुत मानसिक स्वतंत्रता परम आवश्यक है–चाहे उस स्वतंत्रता में अभिमान और नम्रता दोनों का मेल हो और चाहे वह नम्रता ही से उत्पन्न हो।

अथवा

जिस मनुष्य की बुद्धि और चतुराई उसके दृढ़ हृदय के आश्रय पर ही स्थित रहती है, वह जीवन और कर्म–क्षेत्र में स्वयं भी श्रेष्ठ और उत्तम रहता है और दूसरों को भी श्रेष्ठ और उत्तम बनाता है।

2. इस बात का अनुभव यदि आपको न हो तो किसी बुड्ढे से पूछ देखिए, सिवाय सतुआ चाटने के और रोटी को दूध में तथा दाल में भिगो के गले के नीचे उतार देने के दुनिया भर की चीजों के लिए तरस ही के रह जाता होगा।

अथवा

ज्ञान कहीं भी मिलता हो उसे ग्रहण ही कर लेना चाहिए। परन्तु अपनी ही भाषा और भाषा के साहित्य की उन्नति से ही हो सकता है। उसी के साहित्य को प्रधानता देनी चाहिए, क्योंकि अपना, अपने देश का, अपनी जाति का उपकार और कल्याण अपनी भाषा के साहित्य की उन्नति से ही हो सकता है। ज्ञान, विज्ञान, धर्म और राजनीति की भाषा सदैव लोकभाषा ही होनी चाहिए। अतएव अपनी भाषा के साहित्य की सेवा और अभिवृद्धि करना, सभी दृष्टियों से, हमारा परम धर्म है।

3. ''यह झूठ है। बाबू साहब के ऐसा धर्मात्मा तो कोई है नहीं। कितनी विधवाएँ उनकी दी हुई धोती से अपना तन ढकती हैं। कितनी लड़कियों की ब्याह–शादी होती है। कितने सताये हुए लोगों की उनके द्वारा रक्षा होती है।''

अथवा

''कुत्ते की देह से न जाने कैसी दुर्गन्ध आ रही थी; पर उसे अपनी गोद में चिमटाये हुए वह ऐसे सुख का अनुभव कर रहा था, जो इधर महीनों से उसे न मिला था।''

4.''जब मेहमान बैठ गये और माँ पर से सब की आँखें हट गयीं, तो माँ धीरे से कुर्सी पर से उठीं और सबसे नजरें बचाती हुई अपनी कोठरी में चल गयीं।''

अथवा

''देखो भाई, सर्टीफिकेट पक्काकर देंगे, सरकार का रजिस्टर नंबर देंगे, रूपैया चार लगेंगे।''वैद्यजी ने जैसे खुद चार रुपये पर उसके भड़क जाने का अहसास करते हुए कहा, ''अगर पिछला न लो दो रुपये में काम चल जायेगा.......''

5. ''चलाना ही होगा। और कोई उपाय नहीं है। मैं जिस समाज की कल्पना करता हूँ, उसमें गृहस्थ –सन्यासी और सन्यासी –गृहस्थ होंगे। अर्थात् संन्यास और गार्हस्थ्य के बीच वह दूरी नहीं रहेगी जो परंपरा से चलती आ रही है।''

अथवा

''भई, सरकारी पैसे का मामला है। पेंशन का केस बीसों दफतरों में जाता है। देर लग जाती है। हजारों बार एक ही बात को हजार जगह लिखना पड़ता है, तब पक्की होती है।''

————